

2



## वर्ण-विचार एवं उच्चारण (Orthography and Pronunciation)

नीचे दिए गए वाक्य को पढ़िए और वर्णों को जानिए—



तारा घर जाती है।

उपर्युक्त वाक्य चार शब्दों से बना है। प्रत्येक शब्द में कुछ ध्वनियाँ हैं; जैसे—

तारा = त् + आ + र् + आ

घर = घ् + अ + र् + अ

जाती = ज् + आ + त् + ई

है = ह् + ऐ

इन ध्वनियों के और खंड नहीं किए जा सकते। यही ध्वनियाँ वर्ण या अक्षर कहलाती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि अथवा इकाई, जिसके खंड नहीं किए जा सकते, उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं।

**वर्णमाला**—वर्णों को एक निश्चित क्रम में लिखा जाता है। वर्णों की इसी व्यवस्था को वर्णमाला कहते हैं। अतः

वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं।

हिंदी की वर्णमाला निम्नलिखित है—

स्वर — अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अनुस्वार — अं

विसर्ग - अः

अनुनासिक - अँ

आगत ध्वनियाँ - चंद्र (ँ) कॉफी; नुकता - (.) फ़िल्म

व्यंजन -	क	ख	ग	घ	ङ
	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	प	फ	ब	भ	म
	य	र	ल	व	
	श	ष	स	ह	(33)
संयुक्त व्यंजन	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र	(4)
अतिरिक्त व्यंजन	ड़	ढ़			(2)

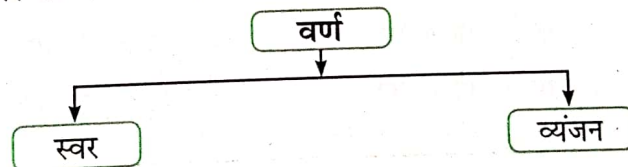
पंचम वर्ण



### ध्यान रहे-

- अनुस्वार (अं) एवं विसर्ग (अः) को अयोगवाह कहते हैं।
- चंद्रबिंदु (ँ) को अनुनासिक कहते हैं।
- ङ तथा ढ से कोई शब्द शुरू नहीं होता।
- (ँ) और नुकता (.) को आगत ध्वनियाँ कहते हैं।
- अरबी-फ़ारसी शब्दों के साथ नुकता का तथा अंग्रेज़ी शब्दों के साथ ँ का प्रयोग होता है; जैसे-कागज़, कॉलिज।

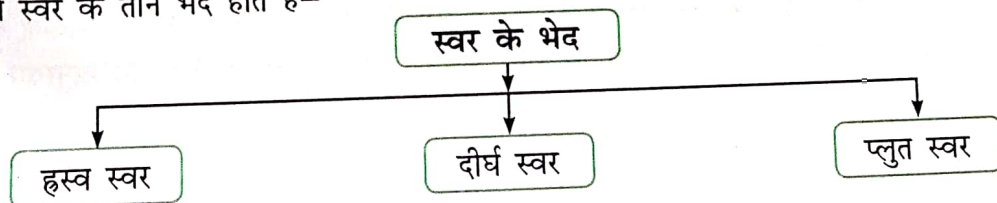
उच्चारण एवं प्रयोग के आधार पर वर्णों को दो भागों में विभाजित किया गया है-



**स्वर**-जिन वर्णों का उच्चारण करते समय किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती, उन्हें **स्वर** कहते हैं। जब हम इनका उच्चारण करते हैं, तो हवा बिना रुकावट के मुख से बाहर निकलती है। हिंदी भाषा में स्वरों की संख्या ग्यारह (11) है।

ग्यारह स्वर - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

हिंदी भाषा में स्वर के तीन भेद होते हैं-





**ह्रस्व स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम यानी एक मात्रा का समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या चार है— अ, इ, उ, ऋ।

**दीर्घ स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है — आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

**प्लुत स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं; जैसे ओऽऽऽऽ.मा। इसे वैदिक मंत्रों के उच्चारण में प्रयोग किया जाता है।

### स्वरों की मात्राएँ

स्वरों का प्रयोग जब व्यंजनों के साथ किया जाता है, तब उनके रूप बदल जाते हैं। स्वरों के मूल रूप के स्थान पर उनके कुछ निश्चित चिह्न प्रयोग किए जाते हैं, जिन्हें मात्राएँ कहते हैं।

स्वर	मात्राएँ	मात्रा के साथ व्यंजन	प्रयोग का तरीका
अ	कोई मात्रा नहीं	क् + अ = क	अ के जुड़ने से हलन्त हट जाएगा
आ	।	क् + आ = का	व्यंजन के बाद
इ	ि	क् + इ = कि	व्यंजन से पूर्व
ई	ी	क् + ई = की	व्यंजन के बाद
उ	ु	क् + उ = कु	व्यंजन के नीचे
ऊ	ू	क् + ऊ = कू	व्यंजन के नीचे
ऋ	ॠ	क् + ऋ = कृ	व्यंजन के नीचे
ए	े	क् + ए = के	व्यंजन के ऊपर
ऐ	ै	क् + ऐ = कै	व्यंजन के ऊपर
ओ	ो	क् + ओ = को	व्यंजन के बाद
औ	ौ	क् + औ = कौ	व्यंजन के बाद

#### ध्यान रहे—

- व्यंजनों के नीचे हलन्त ( ् ) का प्रयोग उन्हें स्वर रहित दर्शाने के लिए किया जाता है।
- 'र' में उ और ऊ की मात्राएँ नीचे नहीं लगतीं, ये बीच में लगती हैं; जैसे—  
रु + उ = रुपया, रु + ऊ = रूप

**अनुस्वार**—जिन वर्णों के उच्चारण के समय हवा केवल नाक से निकलती है, उन्हें शिरोरेखा के ऊपर बिंदु ( ं ) द्वारा दर्शाया जाता है। इसे अनुस्वार कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का अंतिम अक्षर नाक की आवाज़ के साथ बोला जाता है। इनमें निहित नाक की ध्वनि जब स्वर के साथ जुड़कर प्रयुक्त होती है, तब वह अनुस्वार कहलाती है; जैसे—कंठ, चंचल आदि।

अनुनासिक—  
( ँ ) लगाया

विसर्ग—इसका  
शब्दों के साथ

जिन वर्णों के  
स्वरों के नहीं  
मिलाकर इन  
व्यंजन के नि

1. स्पर्श व्यंजन  
स्पर्श व्यंजन  
प्रत्येक वर्ग

ध्यान रहे

2. अंतस्थ  
समय जीभ  
इसलिए इ  
चार है—

3. ऊष्म  
करती है,



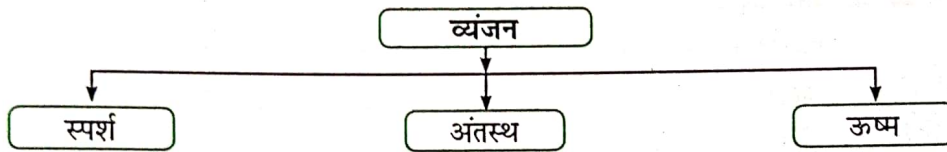
**अनुनासिक**—जिन वर्णों के उच्चारण में हवा नाक और मुँह दोनों से बाहर निकलती है, उस वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु (◌ं) लगाया जाता है, जिसे अनुनासिक कहते हैं; जैसे—पाँच, आँख, मुँह आदि।

**विसर्ग**—इसका उच्चारण 'ह' की भाँति होता है। इसे दो बिंदु (:) लगाकर दर्शाते हैं। हिंदी में प्रचलित केवल संस्कृत शब्दों के साथ ही इस ध्वनि का प्रयोग होता है; जैसे—पुनः, अतः, प्रातः आदि।

### व्यंजन

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। अतः व्यंजनों का उच्चारण बिना स्वरों के नहीं किया जा सकता। हिंदी में व्यंजनों की मूल संख्या तैंतीस (33) है। अतिरिक्त एवं संयुक्त व्यंजनों को मिलाकर इनकी संख्या उनतालीस (39) है।

व्यंजन के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—



1. **स्पर्श व्यंजन**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के अलग-अलग स्थानों को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 27 है। इन्हें पाँच प्रमुख वर्गों में बाँटा गया है। ट वर्ग में सात तथा बाकी के प्रत्येक वर्ग में पाँच-पाँच व्यंजन होते हैं।

वर्ग	व्यंजन	उच्चारण स्थान
'क' वर्ग	क, ख, ग, घ, ङ	कंठ
'च' वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ	तालु
'ट' वर्ग	ट, ठ, ड, ढ ण (ड़ ढ़)	मूर्धा
'त' वर्ग	त, थ, द, ध, न	दंत
'प' वर्ग	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ

**ध्यान रहे**—प्रत्येक वर्ग के अंतिम वर्ण को पंचम वर्ग कहते हैं।

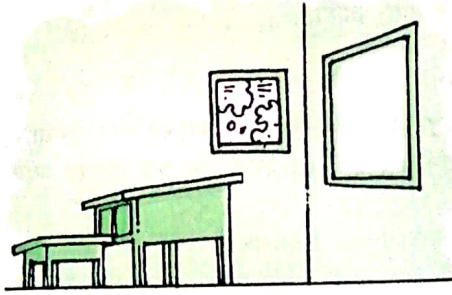
2. **अंतस्थ व्यंजन**—इनके उच्चारण में वायु का अवरोध बहुत कम समय के लिए होता है। इनका उच्चारण करते समय जीभ मुख के किसी भी भाग का पूरा स्पर्श नहीं करती। इनका उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के मध्य का है इसलिए इन्हें अंतस्थ व्यंजन कहते हैं। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और ओंठों के स्पर्श से होता है। इनकी संख्या चार है— **य र ल व**

3. **ऊष्म व्यंजन**—इनका उच्चारण करते समय श्वास मुख से रगड़ खाकर निकलती है एवं ऊष्मा अर्थात् गरमी पैदा करती है, इसलिए इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या भी चार है— **श ष स ह**



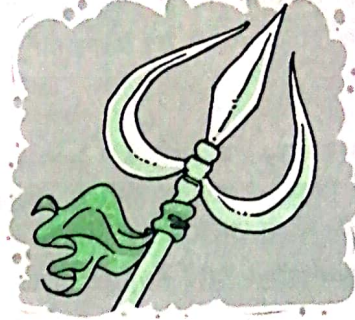
## संयुक्त व्यंजन

जब दो व्यंजन मिलने पर नया व्यंजन बनता है, तो उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं। संयुक्त व्यंजन संख्या में चार हैं।



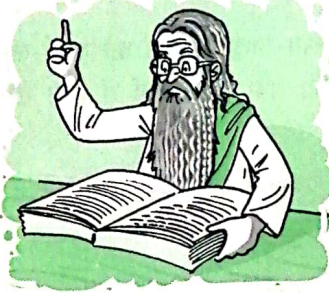
क् + प = क्ष

कक्षा



त् + र = त्र

त्रिशूल



ज् + ज्ञ = ज्ञ

ज्ञानी

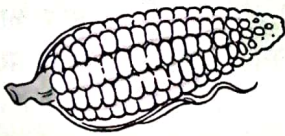


श् + र = श्र

श्रमिक

## द्वित्व व्यंजन-

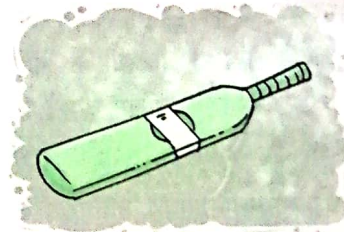
जब एक ही व्यंजन दो बार आए, एक बार बिना स्वर के और दूसरी बार स्वर के साथ, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं-



क्क = मक्का



च्च = बच्चा



ल्ल = बल्ला

'र' व्यंजन आ

- मूल रूप
- (५)
- है; जै
- (८)
- लगाय
- (९)

शब्द के व

कछुआ

काजल

दिनकर

चीनी

कुसुम

कूदना

कृपा

केला

पैसा

मोर

पौधा

सुंदर

अतः

चाँद

वर्ण

ग्रह

राष्ट्र

त्रिशूल

ज्ञान

श्रीमान

## ‘र’ के विभिन्न रूप

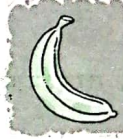
‘र’ व्यंजन अपने मूल रूप में तथा अन्य व्यंजनों के साथ जुड़ने पर मात्रा के रूप में लिखा जाता है।

- मूल रूप में ‘र’ – रथ, रास्ता, रस आदि।
- (ँ) – जब ‘र’ स्वर रहित (र्) होता है, तो वह शिरोरेखा के ऊपर रेफ (ँ) के रूप में लगाया जाता है; जैसे-धर्म, सूर्य, पर्व आदि।
- (ः) – जब ‘र’ से पहले वाला व्यंजन स्वर रहित होता है, तो ‘र’ को उसके पैर में पदेन (ः) के रूप में लगाया जाता है; जैसे-प्रकाश, प्रभात, क्रय आदि।
- (ः) – ‘ट’ और ‘ड’ में ‘र’ पदेन (ः) के रूप में ऐसे लगता है; जैसे-ट्रक, ड्रम आदि।

## वर्ण-विच्छेद

शब्द के वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है; जैसे-

कछुआ	-	क् + अ + छ + उ + आ
काजल	-	क् + आ + ज् + अ + ल् + अ
दिनकर	-	द् + इ + न् + अ + क् + अ + र् + अ
चीनी	-	च् + ई + न् + ई
कुसुम	-	क् + उ + स् + उ + म् + अ
कूदना	-	क् + ऊ + द् + अ + न् + आ
कृपा	-	क् + ऋ + प् + आ
केला	-	क् + ए + ल् + आ
पैसा	-	प् + ऐ + स् + आ
मोर	-	म् + ओ + र् + अ
पौधा	-	प् + औ + ध् + आ
सुंदर	-	स् + उ + न् + द् + अ + र् + अ
अतः	-	अ + त् + अः
चाँद	-	च् + आँ + द् + अ
वर्ण	-	व् + अ + र् + ण् + अ
ग्रह	-	ग् + र् + अ + ह् + अ
राष्ट्र	-	र् + आ + ष् + ट् + र् + अ
त्रिशूल	-	त् + र् + इ + श् + ऊ + ल् + अ
ज्ञान	-	ज् + ज् + आ + न् + अ
श्रीमान	-	श् + र् + ई + म् + आ + न् + अ





## आओ दोहरा लें

- भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं।
- वर्ण के दो भेद होते हैं- 1. स्वर 2. व्यंजन।
- स्वरो का उच्चारण बिना किसी वर्ण की सहायता के होता है।
- अ स्वर की कोई मात्रा नहीं होती।
- व्यंजनों का उच्चारण स्वर की सहायता से होता है।
- स्वर के तीन भेद होते हैं-ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत।
- व्यंजन के तीन भेद होते हैं-स्पर्श, अंतस्थ एवं ऊष्म।
- वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।



## अभ्यास

1. ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर अलग करके लिखिए-

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

ह्रस्व - .....

दीर्घ - .....

2. दिए गए स्वरो की मात्राएँ लिखकर उनके प्रयोग करने के तरीके लिखिए-

स्वर	मात्राएँ	प्रयोग करने का तरीका
आ	.....	.....
ई	.....	.....
उ	.....	.....

ए		
ओ		
औ		

3. दिए गए शब्दों पर अनुस्वार ( ं )/अनुनासिक ( ँ ) लगाकर उचित शब्द लिखिए-

दग - .....  
मदिर - .....  
दाव - .....  
धुआ - .....  
प्रशसा - .....

मुह - .....  
बाट - .....  
सुदर - .....  
सग - .....  
महगा - .....

4. दिए गए वर्ग के वर्ण तथा उच्चारण स्थान लिखिए-

कवर्ग - .....  
चवर्ग - .....  
टवर्ग - .....  
तवर्ग - .....  
पवर्ग - .....

5. दिए गए संयुक्त व्यंजन किन व्यंजनों के मेल से बने हैं, लिखिए तथा उनके प्रयोग वाले दो शब्द भी लिखिए-

क्ष = ..... + ..... - .....  
त्र = ..... + ..... - .....  
ज्ञ = ..... + ..... - .....  
श्र = ..... + ..... - .....



6. दिए गए शब्दों में 'र' का सही रूप लगाइए-

धम - .....  
सूय - .....

डम - .....  
पकाश - .....



कम - .....

टेन - .....

वत - .....

शम - .....

7. वर्ण-विच्छेद कीजिए-

नभचर - .....

बादल - .....

बिजली - .....

फुलवारी - .....

मैना - .....

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) वर्ण किसे कहते हैं? वर्ण के भेदों के बारे में बताइए।

(ख) स्वर तथा व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(ग) स्वर तथा व्यंजन के भेद लिखिए।

(घ) संयुक्त तथा द्वित्व व्यंजन किन्हें कहते हैं?